इकाई 19 भारत का व्यापारः रुझान, संरचना और चुनौतियां*

संरचना

19.0 उद्देश्य

19.1 प्रस्तावना

19.2 स्वतंत्रता के बाद भारत के विदेश व्यापार का पैटर्न

19.3 भारत के विदेश व्यापार की दिशा

19.4 भारत के विदेश व्यापार की संरचना

19.5 भारत के विदेश व्यापार के समक्ष चुनौतियां

19.6 सारांश

19.7 मुख्य शब्द

19.8 कुछ उपयोगी ग्रन्थ

19.9 बोध प्रश्नों की जाँच हेतु उत्तर/संकेत

19.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोपरान्त समक्ष होंगेः

- भारत के विदेश व्यापार के पैटर्न, दिशा और संरचना की व्याख्या कर पाने में,
- भारत के विदेशी व्यापार की सरंचना की व्याख्या कर पाने में,
- भारतीय विदेश व्यापार के सामने आने वाली चुनौतियों का आलोचनात्मक परीक्षण कर पाने में।

19.1 प्रस्तावना

विदेश व्यापार भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वतंत्रता के बाद की अवधि के दौरान भारतीय विदेश व्यापार की दिशा, संरचना और मात्रा में वृद्धि हुई है। हालांकि, योजनाकाल की प्रारंभिक अवधि के दौरान विदेश व्यापार में वृद्धि को उचित नहीं बताया जा सकता है क्योंकि कुल विश्व व्यापार में भारतीय हिस्सेदारी उल्लेखनीय रूप से कम बनी हुई है और पिछले कुछ वर्षों में इसमें गिरावट आई है। स्वतंत्रता से पहले भारत का विदेश व्यापार आम तौर पर औपनिवेशिक था और भारत औद्योगिक देशों को विशेष रूप से इंग्लैंड को खाद्य पदार्थों और कच्चे माल का निर्यात करता था और विनिर्मित वस्तुओं का आयात करता था। आयातित विनिर्मित वस्तुओं पर इस निर्भरता के कारण भारत में औद्योगीकरण नहीं हो सका और ब्रिटिश शासन के समय भारत से विनिर्माण निर्यात में गिरावट आई। 1947 के बाद व्यापार का औपनिवेशिक पैटर्न एक विकासशील अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुरूप बदल गया और भारत उत्पादन की कुछ श्रृंखला में नई क्षमता के निर्माण और मौजूदा भारतीय विनिर्माण फर्मों की समग्र उत्पादन क्षमता में सुधार करने के लिए महत्वपूर्ण मशीनरी का आयात करता था।

* डॉ. प्रवीण जाधव, सहायक प्रोफेसर, इंस्टीट्यूट ऑफ इंफ्रास्ट्रक्चर टेक्नोलॉजी रिसर्च एंड मैनेजमेंट (आईआईटीआरएएम) कृत

मशीनरी के इन आयातों को विकासात्मक आयात कहा जाता था। इसी तरह, भारत औद्योगीकरण की प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए कच्चे माल और मध्यवर्ती वस्तुओं का आयात करता था जिसे अनुरक्षण आयात कहा जाता है। इन दो प्रकार के आयातों का मुख्य उद्देश्य भारतीय बाजार के भीतर घरेलू उत्पादन को बढ़ाना था। भारतीय अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति की दर को नियंत्रित करने के लिए उपभोक्ता वस्तुओं जो भारतीय बाजार में दुर्लभ थे का आयात भी किया जाता था। इसलिए स्वतंत्रता के बाद भारत के आयात में बहुत तेज दर से वृद्धि हुई और भारत का समग्र व्यापार संतुलन ऋणात्मक हो गया।

वर्ष 1991 से भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद से, इसके विदेश व्यापार में कई गुना वृद्धि हुई है और वस्तुओं के साथ–साथ भौगोलिक संरचना में महत्वपूर्ण संरचनात्मक बदलाव हुए हैं। उदारीकरण के बाद के पहले दो दशकों में विभिन्न उत्पाद श्रृंखलाओं में मात्रात्मक प्रतिबंधों और प्रशुल्क स्तरों में महत्वपूर्ण रूप से की गयी कमी ने भारत के विदेश व्यापार में सुधार किया। तथापि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के युग के दौरान भारत के विदेश व्यापार के आकार और संरचना में सुधार हुआ लेकिन विदेश व्यापार में यह वृद्धि संतोषजनक नहीं है क्योंकि दुनिया के कुल विदेश व्यापार में भारत की हिस्सेदारी उल्लेखनीय रूप से कम रही है। तालिका 19.1 में 1980 से 2020 तक विश्व व्यापार में भारत के हिस्से को दर्शाया गया है। आंकड़ों से पता चलता है कि 1980 में, कुल विश्व व्यापार में भारत का हिस्सा 0.4% थी और वर्ष 2020 में यह 1.6% थी।

तालिका 19.1: विश्व निर्यात में भारत का हिस्सा

वर्ष	विश्व निर्यात में भारत का हिस्सा (प्रतिशत में)
1980	0.4
1985	0.5
1990	0.5
2000	0.7
2005	1.0
2010	1.5
2014	1.7
2015	1.6
2019	1.7
2020	1.6
2021	1.77
2022	1.8

स्रोतः यूएनसीटीएडी आंकड़े

पिछले कुछ वर्षों में, दुनिया के कई क्षेत्रों के साथ भारत के व्यापार संबंधों में वृद्धि हुई है। भारत सरकार ने अपनी विभिन्न विदेश व्यापार नीतियों में अपने निर्यात के साथ–साथ उनके गंतव्यों में विविधता लाने के लिए प्रमुख पहल की है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद योजनाकाल के विभिन्न वर्षों के लिए भारत के विदेश व्यापार प्रदर्शन और पैटर्न को नीचे समझाया गया है।

19.2 स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के विदेश व्यापार का पैटर्न

यह खंड स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1947 से भारत के विदेश व्यापार के पैटर्न को महत्वपूर्ण सात चरणों में विभाजित करके पूरी अवधि की व्याख्या करता है। यह खंड विभिन्न पंचवर्षीय योजना के दौरान भारत के विदेश व्यापार की बदलती संरचना का वर्णन करता है।

1) 1947–1950 पंचवर्षीय योजनाकाल से पहले

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से योजना अवधि तक भारत के विदेश व्यापार में निर्यात की तुलना में आयात में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि हुई। भारत के आयात में वृद्धि का मुख्य कारण भारत और पाकिस्तान के बीच विभाजन के कारण खाद्यान्न जैसे कि गेहूँ और चावल और बुनियादी कच्चे माल जैसे कि जूट और कपास की कमी थी। दूसरा कारण युद्ध की वजह से विभिन्न नियंत्रणों और प्रतिबंधों के परिणामस्वरूप सीमित मांग और तीसरा कारण 1947–1950 के दौरान जल विद्युत संयंत्रों और अन्य परियोजनाओं की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए आयातित मशीनरी और उपकरणों की उच्च मांग थी।

2) 1951–1955 पहली पंचवर्षीय योजना

पहली पंचवर्षीय योजना के दौरान भारत के विदेश व्यापार संबंधी दस्तावेजों से पता चलता है कि आयात का वार्षिक औसत मूल्य 730 करोड़ रुपये था और निर्यात का औसत मूल्य 622 करोड़ रुपये के साथ व्यापार घाटा 108 करोड़ रुपये था। व्यापार घाटे में वृद्धि का मुख्य कारण औद्योगीकरण पर अधिक ध्यान देना था जिसके कारण भारत में पूंजीगत वस्तुओं के आयात में वृद्धि हुई। पहली पंचवर्षीय योजना में भारत से निर्यात में जड़त्व था।

तालिका 19.2: विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान वार्षिक औसत व्यापार संतुलन

वर्ष	निर्यात (एफ.ओ.बी.)[1]	आयात (सी.आई.एफ.)[2]	व्यापार संतुलन
1950–1955	622	730	–108
1956–1960	613	1080	–467
1961–1965	747	1224	–477
1966–1968 (वार्षिक योजना)	3708	5775	–2067
1969–1973	1810	1970	–162
1974–1978	4728	5538	–810
1979–80 (वार्षिक योजना)	6418	9142	–2724
1980–1984	8967	14683	–5716
1985–1990	17382	25112	–7730

स्रोतः Reserve Bank of India, Handbook on Statistics on Indian Economy

[1] निःशुल्क ऑन बोर्ड (एफ ओ बी) यह इंगित करता है कि बिक्री किए गए माल, जिसे जहाज पर लादा गया है, का स्वामित्व और दैयता विक्रेता से क्रेता को हस्तान्तरित कर दी गयी है। यदि माल को ले जाने के दौरान वस्तु क्षतिग्रस्त होती है या नष्ट हो जाती है तो इसका दायित्व विक्रेता पर नहीं होता है। विक्रेता को निर्यात के लिए माल को क्लिअर करना होगा। केवल समुद्री परिवहन लेकिन कंटेनरों में मल्टीमॉडल समुद्री परिवहन के लिए नहीं।

[2] सी.आई.एफ. लागत बीमा और माल ढुलाई (गंतव्य के बंदरगाह का नाम) को संदर्भित करता हैः विक्रेता को लागत का भुगतान करना होगा और माल ढुलाई में माल को गंतव्य के बंदरगाह पर लाने के लिए बीमा शामिल है। हालांकि, जहाज पर माल लोड होने के बाद का जोखिम खरीदार का हो जाता है।

3) 1956–1960– दूसरी पंचवर्षीय योजना

भारत सरकार ने दूसरी पंचवर्षीय योजना में भारत के भीतर औद्योगीकरण में तेजी के लिए विभिन्न रणनीतियों की शुरुआत की जिसके कारण एक बार फिर भारत के आयात में वृद्धि हुई। दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान भारत सरकार ने इस्पात संयंत्रों जैसे विभिन्न नए उद्योगों की स्थापना की।इन पहलों के परिणामस्वरूप भारतीय रेल के ट्रैक का विस्तार हुआ। दूसरी पंचवर्षीय योजना में भारत का औसत व्यापार घाटा बढ़कर ₹–467 करोड़ हो गया। दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान विदेशी विनिमय संकट गंभीर मुद्दे थे।

4) 1961–1965 तीसरी पंचवर्षीय योजना

तीसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान वार्षिक औसत व्यापार घाटा –477 करोड़ रुपये था। भारत से कुल औसत निर्यात ₹ 613 करोड़ रुपये था और आयात का औसत मूल्य ₹ 1080 करोड़ रुपये था। तीसरी पंचवर्षीय योजना में आयात में वृद्धि का मुख्य कारण युद्ध के डर और पाकिस्तान और चीन द्वारा बनाए गए हिंसक वातावरण के कारण रक्षा व्यय में वृद्धि थी। दूसरा मशीनरी, उपकरण, औद्योगिक कच्चे माल और प्रौद्योगिकी ज्ञान के आयात में वृद्धि हुई थी और अंत में 1965–66 में भारत में खाद्यान्नों का बड़ी मात्रा में आयात हुआ था क्योंकि फसलों के नष्ट हो जाने से खाद्यान्न संकट उत्पन्न हो गया इसलिए वैश्विक बाजार में आसानी से उपलब्ध खाद्यान्न का बड़े पैमाने पर आयात करना पड़ा।

5) 1966–1973 तीन वार्षिक योजनाएं और चौथी पंचवर्षीय योजना

चौथी पंचवर्षीय योजना से पहले प्रतिकूल व्यापार घाटा ने भारत में विदेशी विनिमय की कमी को जन्म दिया। इसलिए, भारत सरकार ने भुगतान संतुलन की समस्या का हल करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व बैंक जैसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों से बड़े पैमाने पर धन उधार लिया। विदेशी उधार और व्यापार घाटे में इस वृद्धि के कारण जून 1996 में भारतीय रुपये का 36.5% तक अवमूल्यन हुआ। रुपये के अवमूल्यन का मुख्य प्रभाव यह था कि इससे निर्यात की मात्रा में वृद्धि हुई और आयात की मात्रा में कमी आई और व्यापार और भुगतान संतुलन अपने पक्ष में हो गया। लेकिन भारत में इन नीतिगत उपायों की घोषणा खराब मानसून के समय की गई थी जिसके बाद अगले साल एक और सूखा पड़ा। इस प्रकार इस नीति का समग्र प्रभाव न्यूनतम था। हालांकि 1966–1967 में भारत के निर्यात में वृद्धि हुई थी लेकिन उस अवधि में भारत में तुलनात्मक रूप से आयात में अधिक वृद्धि हुई। इस प्रकार 1966–1968 के दौरान समग्र औसत व्यापार घाटा – 689 करोड़ रुपये था। 1969 के बाद निर्यात में वृद्धि हुई और आयात प्रतिबंध के कारण आयात में गिरावट आई। भारत सरकार ने 1968 के बाद विभिन्न निर्यात संवर्धन योजनाएं शुरू कीं जिसने भारत के व्यापार संतुलन पर सकारात्मक प्रभाव डाला। इसलिए वर्ष 1972 में स्वतंत्रता के बाद पहली बार व्यापार संतुलन का घनात्मक रहा था जिसमें कुल मिला कर व्यापार संतुलन +104 करोड़ रुपये थे। लेकिन यह सकारात्मक प्रभाव जल्द ही 1973 में पेट्रोलियम उत्पादों, इस्पात और अलौह धातुओं, उर्वरकों और अखबारी कागज की कीमतों में वृद्धि के कारण समाप्त हो गया। इस प्रकार चौथी पंचवर्षीय योजना के दौरान समग्र औसत व्यापार संतुलन ₹ 162 करोड़ था। कुल मिलाकर भारत में अन्य पंचवर्षीय और वार्षिक योजनाओं की तुलना में चौथी पंचवर्षीय योजना में व्यापार सन्तुलन सकारात्मक रहा है।

6) 1974–1979 पांचवीं पंचवर्षीय योजना

अक्टूबर 1973 के बाद वैश्विक अर्थव्यवस्था में शुरू हुए तेल संकट के बाद विश्व व्यापार का पैटर्न गंभीर रूप से प्रभावित हुआ और भारत इसका कोई अपवाद नहीं था। पेट्रोलियम उत्पादों और उर्वरकों तथा खाद्यान्नों के मूल्य में वृद्धि के कारण पांचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान आयातों का मूल्य अत्यधिक उच्च स्तर पर पहुंच गया। भारत में आयात का कुल औसत मूल्य जो चौथी पंचवर्षीय योजना के दौरान ₹ 1810 करोड़ था की तुलना में बढ़कर ₹ 5538 करोड़ हो गया। पांचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान सूती कपड़ों और रेडीमेड वस्त्रों, हस्तशिल्प, मछली, कॉफी, चाय और मूंगफली के निर्यात में वृद्धि के कारण निर्यात के मूल्य में भी वृद्धि हुई।

7) 1979–1984 छठी पंचवर्षीय योजना

विश्व बाजार में पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई जिससे छठी पंचवर्षीय योजना के पहले दो वर्षों में भारत के आयात बिल में वृद्धि हुई। वर्ष 1980–81 के बाद कच्चे तेल के अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों में गिरावट और तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग (ओएनजीसी) द्वारा किए गए नए अन्वेषण कार्यकलापों के कारण कच्चे तेल के घरेलू उत्पादन में वृद्धि के परिणामस्वरूप पेट्रोलियम आयात में गिरावट आई थी। लेकिन इसी अवधि में भारत में गैर–पेट्रोलियम आयात में वृद्धि हुई और छठी पंचवर्षीय योजना में समग्र औसत व्यापार संतुलन सर्वोच्च स्तर पर था। छठी पंचवर्षीय योजना के दौरान निर्यात का कुल औसत मूल्य 8967 करोड़ रुपये और आयात का कुल औसत मूल्य 14,683 करोड़ रुपये था तथा व्यापार घाटा 5716 करोड़ रुपये था।

8) 1985–1990 सातवीं पंचवर्षीय योजना

कांग्रेस सरकार द्वारा उदारीकरण की नीतियों के अंधाधुंध अनुसरण और जिसे बाद में जनता दल सरकार द्वारा स्वीकार किया गया। सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान भारत का औसत आयात मूल्य 25,112 रुपये तक बढ़ गया लेकिन निर्यात औसतन ₹ 17,382 करोड़ था। इस प्रकार सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान पहली बार वार्षिक औसत व्यापार घाटा बढ़ कर, 7730 करोड़ रुपये के रिकार्ड स्तर पर पहुँच गया। व्यापार संतुलन में इस उच्च स्तरीय व्यापार घाटे ने भारत सरकार को विश्व बैंक और आईएमएफ से 6.7 बिलियन डॉलर से अधिक का ऋण लेने के लिए बाध्य होना पड़ा। इस घाटे ने भारत सरकार को आयात लाइसेंस की लाइसेंसिंग नीति को धीमा करने के लिए भी मजबूर किया।

9) 1991 के बाद भारत का विदेश व्यापार

1991 से भारत सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ाने के लिए आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीति अपनाई। 1991 में भारतीय रुपये के अवमूल्यन और क्रमशः 1993–94 और 1994–95 के दौरान व्यापार खाते में भारतीय रुपये की परिवर्तनीयता ने व्यापार संतुलन की स्थिति में सुधार किया और यह –33.50 बिलियन रुपये हो गया। लेकिन बाद के वर्षों के दौरान व्यापार घाटा फिर से बढ़ गया जिसे नीचे दी गई तालिका से समझाया गया है। तालिका 19.3 1991 से 2022–23 तक भारत के निर्यात, आयात और व्यापार संतुलन को दर्शाता है।

तालिका 19.3: भारत का विदेश व्यापार – 1991 के बाद

भारत का विदेश व्यापार – 1991 के बाद			
(₹ बिलियन)			
वर्ष	निर्यात	आयात	व्यापार संतुलन
1991–92	440.42	478.51	–38.09
1992–93	536.88	633.75	–96.86
1993–94	697.51	731.01	–33.50
1994–95	826.74	899.71	–72.97
1995–96	1063.53	1226.78	–163.25
1996–97	1188.17	1389.20	–201.03
1997–98	1301.01	1541.76	–240.76
1998–99	1397.53	1783.32	–385.79
1999–00	1595.61	2152.37	–556.75
2000–01	2035.71	2308.73	–273.02
2001–02	2090.18	2452.00	–361.82
2002–03	2551.37	2972.06	–420.69
2003–04	2933.67	3591.08	–657.41
2004–05	3753.40	5010.65	–1257.25
2005–06	4564.18	6604.09	–2039.91
2006–07	5717.79	8405.06	–2687.27
2007–08	6558.64	10123.12	–3564.48
2008–09	8407.55	13744.36	–5336.80
2009–10	8455.34	13637.36	–5182.02
2010–11	11429.22	16834.67	–5405.45
2011–12	14659.59	23454.63	–8795.04
2012–13	16343.18	26691.62	–10348.44
2013–14	19050.11	27154.34	–8104.23
2014–15	18964.45	27370.87	–8406.41
2015–16	17163.78	24902.98	–7739.20
2016–17	18540.96	25668.20	–7127.24
2017–18	303526.2	465581.0	–162054.8
2018–19	330078.1	514078.4	–184000.3
2019–20	313361.0	474709.3	–161348.2
2020–21	291808.5	394435.9	–102627.4
2021–22	422004.4	613052.1	–191047.7
2022–23	450958.4	714042.5	–263084.

स्रोतः Reserve Bank of India, Handbook of Statistics on Indian Economy.

तालिका 19.3 दर्शाता है कि निर्यात और आयात के बीच समग्र अंतर बढ़ गया है और इससे भारत का व्यापार घाटा बढ़ता जा रहा है। भारत का व्यापार घाटा 2012–13 में –10348.44 मिलियन डॉलर तक बढ़ गया। वाणिज्य मंत्रालय के अनुसार मोटे तौर पर भारत के दो प्रमुख व्यापार भागीदारों संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय बाजारों में वैश्विक वित्तीय संकट बढ़ने के परिणामस्वरूप मांग में कमी हो जाने के कारण यह व्यापार घाटा उत्पन्न हुआ है। वर्ष 2012–13 के बाद भारत के व्यापार संतुलन में सुधार हुआ क्योंकि देश का निर्यात 2013–14 में 19050.11 मिलियन डॉलर को पार कर गया जबकि उसी वित्तीय वर्ष में देश का आयात 27154.34 मिलियन डॉलर था। वर्ष 2015–16 और 2016–17 के दौरान भारत के आयात में कमी के कारण भारत के व्यापार संतुलन में और कमी आई क्योंकि हाल के वर्ष में सरकार मेक इन इंडिया आदि जैसे कुछ अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से घरेलू उत्पादन पर ध्यान केंद्रित कर रही है। वर्ष 2015–16 से 2016–17 तक भारत का आयात 24902.98 मिलियन डॉलर से बढ़कर 25668.20 मिलियन डॉलर हो गया। व्यापार करने वाली अर्थव्यवस्थाओं के आंकड़ों के अनुसार भारत का व्यापार संतुलन 1980 के बाद से निरंतर व्यापार घाटे को दर्शाता है जो ज्यादातर आयात विशेष रूप से खनिज ईंधन, तेल और मोम और बिटुमिनस पदार्थ और मोती, कीमती और अर्ध–कीमती पत्थर और आभूषण में ठोस वृद्धि के कारण हुआ है। हाल के वर्षों में, चीन, स्विट्जरलैंड, सऊदी अरब, इराक और इंडोनेशिया के साथ सबसे बड़े व्यापार घाटे को दर्ज किया गया था। भारत ने अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, हांगकांग, यूनाइटेड किंगडम और वियतनाम के साथ व्यापार अधिशेष दर्ज किया है। वर्ष 2018–19 में भारत के निर्यात और आयाम क्रमशः 330078.1 मिलियन डॉलर तथा 514078.4 मिलियन डॉलर के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गए लेकिन 2019–20 के अंतिम त्रैमास में कोविड–19 वैश्विक महामारी जनित लॉकडाउन से उपजी परिस्थितियों के बीच वर्ष 2019–20 एवं 2020–21 में भारत के निर्यातों एवं आयातों दोनों में ही गिरावट दर्ज की गयी जिसके परिणामस्वरूप व्यापार घाटा वर्ष 2020–21 में 103627.4 मिलियन डॉलर तक नीचे आ गया। वर्ष 2021–22 एवं 2022–23 में निर्यातों एवं आयातों में तेजी आने के परिणामस्वरूप व्यापार वर्ष 2021–22 में 196047.7 मिलियन डॉलर और वर्ष 2022–23 में 263084 मिलियन डॉलर हो गया है।

19.3 भारत के विदेश व्यापार की दिशा

नीचे दी गई तालिका 19.4 वर्ष 2017–2018 से 2021–2022 तक भारत की विदेश व्यापार की दिशा को दर्शाती है। इन आंकड़ों से पता चलता है कि भारतीय आयात के प्रमुख स्रोत और भारतीय निर्यात के प्रमुख गंतव्य दुनिया भर में हैं। इन आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि सभी देश समूहों से निर्यात आयात दोनों के मूल्यों में लगातार वृद्धि हुई है। भारत के व्यापार में महत्वपूर्ण बाजार विविधीकरण हुआ है। क्षेत्रवार देखें तो यूरोप और अमेरिका को भारत से किए जाने वाले निर्यात में गिरावट आई है जबकि एशिया और अफ्रीका को भारत से किया जाने वाला निर्यात बढ़ा है। आंकड़ों से पता चलता है कि भारत को सर्वाधिक निर्यात ओपेक देशों से किया जाता है और उसके बाद यूरोपीय संघ का स्थान है। पेट्रोलियम उत्पाद जो ओपेक देशों से प्राप्त होते हैं इस समूह के सूची में ओपेक देशों के शीर्ष पर होने का प्राथमिक कारण हैं। भारत में, हम कच्चे पेट्रोलियम उत्पादों का आयात करते हैं और कम श्रम लागत के कारण इन कच्चे पेट्रोलियम उत्पादों को भारत में

संसाधित किया जाता है और फिर से दूसरे गंतव्य को पुनः वापस निर्यात किया जाता है। इसलिए भारत के व्यापार बास्केट की सूची में शीर्ष पर आयात और निर्यात दोनों में पेट्रोलियम उत्पाद शामिल हैं। हाल के समय में विकासशील देश भी भारत के प्रमुख व्यापारिक साझेदार के रूप में उभरे हैं। विकासशील देशों के समूह में चीन, ताइवान और हांगकांग जैसे एशियाई देश प्रमुख भागीदार हैं।

तालिका 19.4: भारत के विदेश व्यापार की दिशा

समूह/देश	2017-18		2018-19		2019-20		2020-21		2021-22	
	Export	Import	Export	Import	Export	Import	Export	Import	Export	Import
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
I. ओ.ई.सी.डी. देश	119622.4	126728.5	128175.0	144875.7	124021.6	133850.5	118613.9	116178.2	180759.5	163888.3
ए. यूरोपीय संघ	53603.8	47880.8	57203.1	58433.8	53738.9	51764.3	41370.8	39722.4	64975.3	51411.5
जिसमें है :										
1. बेल्जियम	6206.9	5993.4	6729.9	10469.2	5809.9	8879.5	5235.6	6940.7	10084.4	9951.7
2. फ्रांस	4900.3	6524.2	5232.6	6665.7	5097.8	6168.8	4782.2	4343.2	6640.9	5782.1
3. जर्मनी	8687.8	13295.7	8902.4	15161.1	8290.9	13691.1	8124.9	13643.0	9883.3	14968.1
4. इटली	5709.9	4706.9	5593.4	5292.4	4970.8	4490.9	4735.7	3862.1	8180.8	5048.5
5. नीदरलैंड	6261.1	2512.6	8812.8	4062.8	8366.1	3391.0	6472.8	3317.7	12543.7	4478.1
बी. उत्तर अमेरिका	50384.6	31339.5	55257.7	39064.9	55940.6	39700.2	54583.9	31574.5	79931.0	46446.8
1. कनाडा	2506.2	4728.5	2851.4	3515.4	2851.8	3880.3	2960.8	2686.4	3764.0	3132.8
2. यू एस ए	47878.5	26611.0	52406.3	35549.5	53088.8	35819.9	51623.1	28888.1	76167.0	43314.1
सी. एशिया और ओसेनिया	9099.4	25610.8	8762.0	26534.7	7751.0	22738.7	8964.7	19553.6	14947.5	31530.8
जिसमें हैं :										
1. ऑस्ट्रेलिया	4012.3	13993.7	3520.4	13131.2	2852.1	9782.2	4043.9	8247.3	8283.1	16756.2
2. जापान	4734.2	10973.4	4861.7	12772.7	4520.3	12434.7	4434.6	10924.7	6176.8	14399.8
डी. अन्य ओ ई सी डी देश	6534.5	21897.3	6952.2	20842.3	6591.2	19647.2	13694.5	25327.7	20905.7	34499.2
जिसमें है :										
1. स्विट्जलैंड	1083.8	18923.0	1186.7	18087.6	1200.1	16899.9	1261.5	18231.0	1348.6	23392.3
2. यू के	9691.1	4806.8	9309.3	7561.9	8737.9	6712.6	8157.6	4955.8	10461.3	7017.8
II. ओपेक	44303.0	109358.2	48780.5	136548.7	48180.3	123832.4	33057.0	79651.6	50435.6	151000.9
जिसमें हैं :										
1. ईरान	2652.4	11111.5	3511.0	13525.6	3373.6	1397.3	1774.7	331.5	1451.1	463.4
2. इराक	1462.2	17615.8	1788.7	22372.5	1878.2	23740.2	1499.0	14287.1	2403.3	31927.1
3. कुवैत	1365.7	7165.7	1333.9	7430.8	1286.6	9573.8	1054.2	5214.1	1241.9	11001.8
4. सऊदी अरब	5410.7	22070.0	5561.7	28479.2	6236.9	26857.4	5856.6	16186.8	8758.9	34100.6
5. यू ए ई	28146.1	21739.1	30126.7	29785.3	28853.6	30256.6	16679.5	26623.0	28044.9	44833.5
III. पूर्वी यूरोप	3036.7	12914.5	3504.0	9465.6	4235.9	11964.0	4105.6	9161.4	4763.5	14051.5

जिसमें है :										
1. रूस	2113.4	8573.5	2389.5	5840.4	3017.7	7093.0	2655.5	5485.7	3254.7	9870.0
IV. विकासशील देश	133905.1	207286.8	146523.5	223040.7	134160.2	204837.8	135102.3	189365.8	184523.1	284034.2
A. एशिया	100021.7	165945.0	108513.8	179905.5	95976.2	168033.1	98701.2	154908.3	130843.6	224151.1
a). सार्क	23100.9	3202.7	25348.8	4363.0	21941.4	3835.6	22077.8	3377.1	34228.8	5486.4
1 अफगानिस्तान	709.7	433.8	715.4	435.4	997.6	529.8	825.8	509.5	554.5	510.9
2 बांग्लादेश	8614.3	685.6	9210.1	1044.8	8200.7	1264.7	9691.6	1091.7	16156.4	1977.9
3. भूटान	546.1	378.0	657.3	371.0	738.6	405.7	701.0	433.0	885.8	545.0
4. मालदीव	217.0	5.7	223.0	20.4	226.6	6.0	195.9	24.5	670.4	68.9
5. नेपाल	6613.0	438.4	7766.2	508.1	7160.3	711.6	6838.5	673.2	9645.7	1371.0
6. पाकिस्तान	1924.3	488.6	2066.6	494.9	816.6	14.0	326.9	2.4	513.8	2.5
7. श्रीलंका	4476.5	772.6	4710.2	1488.4	3800.9	903.7	3498.2	642.9	5802.2	1010.0
b). अन्य एशियाई विकासशील देश	76920.8	162742.3	83165.0	175542.5	74034.8	164197.5	76623.4	151531.2	96614.8	218664.7
जिसमें हैं :										
1. जनवादी चीनी गणराज्य	13333.5	76380.7	16752.2	70319.6	16612.8	65260.7	21187.2	65212.3	21259.8	94570.6
2. हांग कांग	14690.3	10676.0	13002.0	17987.0	10967.1	16935.3	10162.4	15172.8	10984.8	19096.6
3. दक्षिण कोरिया	4461.0	16361.8	4705.1	16759.0	4845.1	15659.7	4684.6	12773.0	8085.0	17477.2
4. मलेशिया	5701.6	9011.6	6436.3	10818.6	6364.7	9782.3	6057.7	8373.1	6995.0	12424.2
5. सिंगापुर	10202.8	7467.0	11572.3	16281.6	8922.7	14746.8	8675.5	13304.9	11150.6	18962.2
6. थाईलैंड	3653.8	7134.5	4441.4	7441.8	4299.3	6788.4	4237.6	5682.3	5751.3	9332.6
7. इंडोनेशिया	3963.8	16438.8	5275.6	15849.7	4129.3	15061.9	5026.2	12470.2	8471.5	17702.8
B. अफ्रीका	21472.5	22673.0	24166.8	24449.4	24320.5	21797.8	23613.1	20149.3	34186.6	34941.9
जिसमें हैं :										
1. बेनिन	479.7	223.0	426.9	375.8	326.6	358.9	555.2	326.0	716.4	402.1
2. मिस अरब गणराज्य	2392.3	1292.9	2886.4	1677.8	2504.2	2031.4	2264.4	1892.4	3743.9	3520.8
3. केन्या	1974.6	72.6	2071.8	137.1	2108.6	89.6	1895.8	130.3	2631.9	145.4
4. दक्षिण अफ्रीका	3825.2	6834.7	4067.2	6517.3	4108.2	6969.8	3934.2	7568.2	6085.3	10965.8
5. सूडान	822.7	452.1	920.9	742.6	1096.9	396.8	1022.3	368.3	1077.2	129.2
6. तंज़ानिया	1618.8	1029.7	1704.0	903.5	1740.1	1023.5	1439.1	934.9	2300.9	2279.2

7. ज़ाम्बिया	294.3	1095.0	319.1	510.5	247.6	843.3	268.9	126.5	341.0	118.2
C. लैटिन अमेरिकी देश	12411.0	18668.9	13842.9	18685.8	13863.5	15006.9	12788.0	14308.2	19492.9	24941.2
V. अन्य	229.3	98.3	186.4	56.9	215.0	100.3	194.4	22.3	221.1	31.0
VI. अनिर्दिष्ट	2429.7	9194.6	2907.2	89.7	2547.0	123.5	733.3	56.4	1299.6	45.9
कुल	303526.2	465581.0	330078.1	514078.4	313361.0	474709.3	291808.5	394435.9	422004.4	613052.0

नोट : 1. 2020–21 के आंकड़े संशोधित हैं और 2020–21 के आंकड़े अंतिम हैं।

2. यूरोपीय संघ के डेटा में यू.के. को 2020–21 के बाद से शामिल नहीं किया गया है।

स्रोत : वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय।स्रोतः रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, हैंडबुक ऑन स्टेटिस्टिक्स ऑन इंडियन इकोनॉमी।

19.4 भारत के विदेश व्यापार की संरचना

भारत का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विभिन्न नियोजन अवधि के अंतर्गत कई संरचनात्मक परिवर्तन का साक्षी रहा है। कुल निर्यात में गैर–पारंपरिक वस्तुओं की प्रतिशत हिस्सेदारी में लगातार सुधार हुआ है। भारत के निर्यात बास्केट में रसायन और इंजीनियरिंग वस्तुओं की वृद्धि दर तेज रही है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान रत्न और आभूषण सहित हस्तशिल्प के सामान भारत के निर्यात बास्केट में महत्वपूर्ण वस्तुओं में से एक बन गए हैं। वर्तमान में भारत चाय, कॉफी, चावल, दालों, मसालों, तंबाकू, जूट, लौह अयस्क आदि सहित कुछ पारंपरिक वस्तुओं का निर्यात भी कर रहा है।

तालिका 19.5: भारत के प्रमुख वस्तुओं का निर्यात (अमेरिकी डॉलर)

	(US $ Million)						
वस्तु / वर्ष	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23
1	2	3	4	5	6	7	8
1. चाय	731.3	837.4	830.9	826.5	756.3	751.1	817.50
2. कॉफ़ी	842.8	968.6	822.3	738.9	719.7	1020.7	1146.17
3. चावल	5733.8	7806.2	7750.6	6403.2	8829.2	9671.1	11143.25
4. अन्य अनाज	212.3	248.6	349.0	205.2	705.4	1087.4	1193.20
5. तंबाकू	958.7	934.3	981.3	905.1	876.7	923.6	1213.28
6. मसाले	2851.9	3115.4	3322.4	3621.4	3984.0	3896.0	3788.36
7. काजू	786.9	922.4	654.4	566.8	420.4	453.1	356.39
8. खली	805.4	1093.2	1508.6	827.9	1585.0	1031.9	1600.91
9. तिलहन	1355.2	1174.3	1156.8	1318.1	1235.7	1113.6	1337.80
10. फल और सब्जियां	2454.7	2513.3	2540.9	2380.5	2612.8	2883.1	3205.63
11. अनाज के तैयार व्यंजन और विविध प्रसंस्कृत मदें	1270.8	1416.6	1555.4	1527.0	1859.9	2280.7	2614.00

12. समुद्री उत्पाद	5903.1	7389.2	6802.6	6722.1	5962.4	7772.4	8079.09
13. मांस, डेयरी और कुक्कुट उत्पाद	4368.8	4610.1	4363.7	3714.3	3658.0	4141.0	4029.50
14. लौह अयस्क	1533.5	1471.1	1317.3	2625.0	4896.5	3248.2	1796.64
15. अभ्रक, कोयला और अन्य अयस्क, प्रसंस्कृत खनिजों सहित खनिज	3578.2	3776.9	4254.7	3948.4	4331.8	5217.2	5138.51
16. चमड़े और चमड़े के उत्पाद	5165.6	5289.1	5140.8	4658.5	3301.4	4381.5	4752.37
17. सिरेमिक उत्पाद और कांच के बर्तन	1856.6	2131.8	2649.2	2870.6	3050.6	3464.8	3736.02
18. रत्न एवं आभूषण	43412.8	41544.4	40251.0	35898.5	26022.8	39099.1	37956.87
19. ओषधियाँ और फार्मास्युटिकल्स	16785.0	17282.8	19146.6	20703.5	24444.0	24594.3	25394.03
20. कार्बनिक और अकार्बनिक रसायन	12336.1	18508.5	22379.3	22082.8	22088.5	29364.8	30312.00
21. इंजीनियरिंग सामान	67216.1	78695.7	83621.6	78704.4	76719.6	112163.4	107042.34
22. इलेक्ट्रॉनिक सामान	5962.9	6393.1	8829.4	11700.6	11093.3	15660.4	23571.88
23. सूती यार्न / फैब्रिक /मेड–अप, हथकरघा उत्पाद आदि।	9862.2	10260.4	11215.1	10027.7	9827.9	15298.0	10946.20
24. मानव निर्मित यार्न / फैब्रिक / मेड–अप आदि।	4557.1	4826.3	4980.5	4821.4	3806.3	5614.6	4948.88
25. सभी वस्त्रों का आरएमजी	17368.2	16706.9	16138.3	15488.1	12272.2	16014.8	16191.47
26. जूट विनिर्मित वस्तुएं और फर्श कवरिंग	309.9	335.1	324.9	342.6	371.3	507.6	438.41
27. कालीन	1490.2	1429.8	1481.9	1373.3	1491.4	1789.9	1366.08
28. हस्तनिर्मित कालीन छोड़ कर हस्तशिल्प	1926.7	1823.3	1838.1	1797.9	1707.5	2088.2	1688.68
29. पेट्रोलियम उत्पाद	31545.3	37465.1	46553.6	41288.7	25804.4	67471.7	94524.57
30. प्लास्टिक और लिनोलियम	5796.5	6851.1	8607.5	7551.6	7462.9	9824.6	8365.76
31. अन्य वस्तुएं	16873.7	15705.2	18709.2	17720.6	19910.8	29175.6	32263.50
कुल निर्यात	275852.4	303526.1	330078.2	313361.0	291808.5	422004.4	450958.43

नोट : 2020–21 के आंकड़े संशोधित हैं और 2020–21 के आंकड़े अंतिम हैं।
Source : Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics in 'Handbook of Statistics', RBI

2016–2017 से 2022–2023 की समयावधि के दौरान भारत की प्रमुख वस्तुओं के निर्यात को तालिका में प्रस्तुत किया गया है। इन आंकड़ों से पता चलता है कि भारत से वस्तुओं और सेवाओं के एक विविध समूह निर्यात किया जाता है। इंजीनियरिंग सामान, पेट्रोलियम उत्पाद, रत्न और आभूषण, औषधि और फार्मास्यूटिकल्स, चाय और चावल भारत से सबसे अधिक निर्यात किए जाने वाले सामानों में से कुछ हैं।

तालिका 19.6: प्रमुख वस्तुओं का आयात

वस्तु / वर्ष	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**
1. कपास कच्चा और अपशिष्ट	946.9	979.3	633.1	1328.4	385.9	559.6	1438.52
2. वनस्पति तेल	10892.7	11637.5	9890.3	9672.9	11089.1	18991.6	20837.67
3. दलहन	4244.1	2908.3	1140.8	1440.1	1611.7	2229.0	1943.91
4. फल और सब्जियां	1783.4	2092.6	2143.9	2221.3	2273.4	2640.7	2675.48
5. लुगदी और अपशिष्ट कागज	975.1	1154.6	1311.7	1143.0	851.1	1600.5	2117.90
6. टेक्सटाइल यार्न,फैब्रिक, निर्मित वस्तुएं	1502.5	1837.3	1900.0	1922.3	1501.5	2065.5	2617.79
7. उर्वरक, कच्चा तेल और विनिर्मित	5024.0	5376.3	7467.4	7468.1	7597.3	14169.9	17206.84
8. सल्फर और अनरोस्टेड आयरन पाइराइट	131.2	165.9	217.1	117.7	149.7	475.0	337.93
9. धातु लौह अयस्क और अन्य खनिज	6194.2	9096.9	7583.3	5088.9	4626.1	8950.5	9400.09
10.कोयला, कोक और ब्रिकेट्स, आदि	15759.9	22901.2	26177.8	22455.1	16274.5	31718.3	49735.30
11.पेट्रोलियम, कच्चा तेल और उत्पाद	86963.8	108658.7	140920.6	130550.3	82683.9	161810.5	209573.56
12. लकड़ी और लकड़ी के उत्पाद	4891.8	6027.3	6126.5	5612.2	4449.7	6136.4	7241.13
13. चमड़े और चमड़े के उत्पाद	935.3	1009.2	1057.7	1014.1	579.8	818.8	1028.57
14. कार्बनिक और अकार्बनिक रसायन	16598.4	20631.5	23827.7	20617.1	19825.3	30291.9	33457.12
15. रंगाई/टैनिंग/रंग करने की सामग्री	2282.7	2887.5	3221.9	2906.4	2734.0	3960.2	3865.47
16. कृत्रिम रेजिन, प्लास्टिक सामग्री, आदि	11964.0	14487.7	15682.0	14633.7	13510.0	20230.6	23510.13
17. रासायनिक सामग्री और उत्पाद	5375.1	6663.4	7707.6	7643.2	8441.2	11148.0	12200.44
18. अख़बारी काग़ज़	849.9	776.7	977.7	700.6	294.1	344.7	521.38
19. मोती, कीमती और अर्ध–कीमती पत्थरे	23808.6	34278.9	27075.7	22458.8	18888.0	31007.9	30701.02
20. लोहा और इस्पात	11683.0	14617.6	17656.7	15369.4	12035.9	17303.0	22484.23
21. अलौह धातु	9868.8	12811.7	14733.0	13138.7	11716.6	17601.7	19841.55
22. मशीन टूल्स	3034.6	3519.6	4642.5	4193.1	3169.6	4239.5	4406.69
23. मशीनरी, इलेक्ट्रिकल और गैर–इलेक्ट्रिकल	28445.8	32908.9	37852.4	37691.9	30084.5	39942.5	45433.06
24. परिवहन उपकरण	22687.7	22732.5	24775.8	25284.7	18649.2	20852.4	29406.34
25. परियोजना का माल	2074.4	2077.6	2375.6	2025.5	1498.9	1356.0	1602.90
26. पेशेवर उपकरण, ऑप्टिकल सामान, आदि	3857.2	4754.6	5187.4	5024.1	4528.2	6372.8	6938.10
27. इलेक्ट्रॉनिक सामान	41930.4	52890.7	57377.3	54397.9	54287.9	73674.2	77264.52
28. चिकित्सा और फार्मास्युटिकल उत्पाद	4995.0	5480.7	6359.5	6459.9	6974.6	9072.0	8112.09
29. सोना	27518.0	33657.2	32910.1	28229.7	34603.9	46165.6	35017.76
30. चाँदी	1839.2	3213.8	3748.2	2727.8	790.4	3276.2	5294.57
31. अन्य वस्तुएं	25299.2	23345.4	21397.4	21172.4	18329.6	24046.7	27830.39
कुल आयात	384357.0	465581.0	514078.4	474709.3	394435.9	613052.1	714042.45

नोट : 2020–21 के आंकड़े संशोधित हैं और 2020–21 के आंकड़े अंतिम हैं।

Source : Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics in 'Handbook of Statistics, RBI'

स्रोत : वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय।

पिछले सात वर्षों के दौरान भारत के आयात की प्रमुख मदों को तालिका 19.6 में प्रस्तुत किया गया है। आंकड़ों से पता चलता है कि पेट्रोलियम, कच्चा तेल और उत्पाद, इलेक्ट्रॉनिक सामान, मशीनरी, इलेक्ट्रिकल और गैर–इलेक्ट्रिकल वस्तुएं, दलहन और सोना भारत में सबसे ज्यादा आयात की जाने वाली वस्तुएं हैं। इसके अलावा, पेट्रोलियम उत्पादों, पूंजीगत वस्तुओं, कार्बनिक रसायनों और यौगिकों, चिकित्सा और फार्मास्यूटिकल उत्पादों के आयात भी भारतीय अर्थव्यवस्था में किए जाते हैं। भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में बड़े पैमाने पर मोती, रत्न और पत्थर जैसे विभिन्न उत्पादों के अंतर–उद्योग व्यापार शामिल हैं लेकिन उनके प्रसंस्करण के बाद उन्हें देश से दूसरे देशों को वापस पुनर्निर्यात किया जाता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए नीचे स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) 2016–17 से 2022–23 तक विश्व व्यापार में भारत की हिस्सेदारी के रुझानों पर टिप्पणी करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) वर्ष 2022–23 के दौरान भारतीय आयात में कौन सी वस्तुएं पहली पांच प्रमुख वस्तुएं रही हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

19.5 भारत के विदेश व्यापार के सामने चुनौतियां

भारत सरकार हाल के वर्षों में भारत के विदेश व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए सतत प्रयासरत रही है। भारत सरकार ने भारत के विदेश व्यापार में वृद्धि करने के लिए कई सुधारों और योजनाओं को लागू किया है। इन प्रयासों के बावजूद भारत को विश्व बाजार से अपने विदेश व्यापार में महत्वपूर्ण चुनौतियों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एक महत्वपूर्ण चुनौती और चिंता यह है कि विश्व बाजार में भारत की हिस्सेदारी में अपेक्षित वृद्धि नहीं हो पा रही है। वर्ष 2016 में वैश्विक बाजार में भारत की हिस्सेदारी केवल 1.94% थी जो काफी कम थी। वर्ष 2022 में विश्व निर्यातों में भारत का हिस्सा 1.8 प्रतिशत है। वर्तमान में, प्रशुल्क और गैर–प्रशुल्कीय बाधाओं में वृद्धि, वैश्विक आर्थिक मंदी, बढ़ते संरक्षणवाद, रुके हुए मुक्त व्यापार और बहुपक्षीय समझौते जैसे यूरोपीय संघ के साथ

मुक्त व्यापार समझौते को अभी भी अंतिम रूप नहीं दिया गया है और प्रतिकूल विदेश व्यापार नीतियां भारत के बाह्य क्षेत्र के लिए प्रमुख बाधाएं हैं। भारत में विनिर्माण क्षेत्र अपेक्षित विकास नहीं कर पाया है वर्ष 2022–23 के पण्य व्यापार और सेवाओं के व्यापार के आंकड़े बताते हैं कि पण्य निर्यातों की तुलना में सेवाओं के निर्याताओं में उच्च वृद्धि हुई है। भारत ज्यादातर सेवा व्यापार पर निर्भर करता है जिसकी प्रकृति अस्थिर होती है। इस प्रकार, भारत में विनिर्माण क्षेत्र को एक विकास कर रहे बहुपक्षीय व्यापार क्षेत्र में अवसरों का लाभ उठाने और अधिकाधिक जुड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। भारत की मुख्य चिंता यह है कि अधिकांश व्यापारी विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) द्वारा विकसित वैश्विक मानकों को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं। हाल के वर्षों में, भारत ने आयातित वस्तुओं, सेवाओं या विदेशी स्वामित्व वाली या विदेश में विकसित बौद्धिक संपदा की कीमत पर घरेलू उद्योगों, सेवा प्रदाताओं या बौद्धिक संपदा की रक्षा, मदद या प्रोत्साहित करने के लिए भारत के व्यापारिक भागीदारों द्वारा लगाए गए विभिन्न प्रशुल्कों और गैर–प्रशुल्कीय बाधाओं की बढ़ती प्रवृत्ति देखी है। ये बाधाएं घरेलू उपभोक्ता और पशुओं के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए भी लगाई जाती हैं। ये उपाय व्यापार के लिए प्रच्छन्न बाधाओं के रूप में काम कर सकते हैं और घरेलू और विदेशी उत्पादों, सेवाओं, बौद्धिक संपदा या आपूर्तिकर्ताओं के बीच अनुचित रूप से अंतर कर सकते हैं। ये बाधाएं भारत के विदेशी व्यापार को विकृत कर रही हैं। सक्षमकारी व्यापार सूचकांक (ईटीआई) के विस्तृत आकलन में कहा गया है कि भारत अत्यधिक आयात शुल्क लगाता है जो बाकी दुनिया के साथ भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रभावित कर रहा है। कुछ हद तक, यह भारत को निर्यात के लिए विदेशी बाजार में पहुंचने से भी वंचित करता है।

1) **प्रशुल्कीय और गैर**–प्रशुल्कीय बाधाएंः वर्तमान में, भारत अपने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में बड़े पैमाने पर प्रशुल्कीय और गैर–प्रशुल्कीय बाधाओं का सामना कर रहा है जो देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के मुक्त प्रवाह को प्रतिबंधित करते हैं। व्यापार बाधाएं या तो प्रशुल्कीय बाधाएं हो सकती हैं जिनमें गैट के अनुच्छेद II के अनुसार आयात शुल्क में वृद्धि शामिल है या गैर–प्रशुल्कीय बाधाएं हो सकती हैं जो प्रशुल्कीय बाधाओं जैसे आयात लाइसेंसिंग, मानक, परीक्षण, लेबलिंग और प्रमाणन, राशिपतन रोधी और प्रतिकारी उपायों, निर्यात सब्सिडी और घरेलू समर्थन के अलावा कई अन्य व्यापार बाधाएं हैं। गैर–प्रशुल्कीय बाधाओं की मदद से अधिकांश देश अपने देश में भारत के सामानों पर प्रतिबंध लगा रहे हैं।

2) **वैश्विक संकट** – वर्ष 2007 के सितंबर में संयुक्त राज्य अमेरिका के सब–प्राइम संकट के कारण वैश्विक बाजार को वर्ष 2008 और 2009 की पहली छमाही में मंदी का सामना करना पड़ा और इसके बाद वर्ष 2009 में यूरोपीय संघ के संकट का सामना करना पड़ा। वैश्विक संकट ने रत्न और आभूषण, रेडीमेड गारमेंट्स, हस्तशिल्प और अन्य कई भारतीय सामानों की मांग पर नकारात्मक प्रभाव डाला। इन संकटों के दौरान निर्यातकों को भारतीय वस्तुओं के लिए कम मांग और कम कीमतें मिलीं जो निर्यातकों की तुलन पत्र पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

3) **निर्यात प्रोत्साहन में कमी** – वर्तमान में, भारत सरकार ने निर्यात प्रोत्साहनों को कम कर दिया है जैसे कि डीबीके दरों में कमी, अधिकांश निर्यातकों को दिए गए आयकर लाभ की वापसी आदि। निर्यात प्रोत्साहनों में कमी करने से भारत से निर्यात कम हो जाता है क्योंकि उनकी कीमतों में वृद्धि के कारण विश्व बाजार में भारतीय उत्पाद की प्रतिस्पर्धात्मकता कम हो जाती है।

4) **उत्पाद मानकों की आवश्यकता**ः हाल के वर्षों में, विकसित देश भारत जैसे विकासशील देशों के लिए उच्च उत्पाद मानकों को लागू करते हैं। भारत और अन्य विकासशील देशों को आयातक देशों द्वारा बताई गई विभिन्न प्रयोगशालाओं में परीक्षण कराने की आवश्यकता होती है। इससे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में जाने वाले भारत के उत्पाद की लागत बढ़ जाती है और भारत से होने वाले निर्यात में कमी आती है।

5) **राशिपतन–रोधी (एंटी–डंपिंग) शुल्क**ः हाल के वर्षों में, विकसित देशों द्वारा भारतीय उत्पादों पर लगाए गए राशिपतन–रोधी उपायों में वृद्धि हुई है। उदहारण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने जब अपने प्रारम्भिक जाँच में यह पाया कि भारत और चीन ने निर्यातों के लिए सब्सिडी दी है तो उसने इनसे आयातित इस्पात के फलांज (flanges) पर राशिपतन रोधी शुल्क लगाने का निर्णय लिया।[3] अधिकांश समय एंटी–डंपिंग उपाय उचित होते हैं। इसलिए भारत को संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा लगाए गए राशिपतन–रोधी शुल्कों के संबंध में विवाद को हल करने के लिए डब्ल्यूटीओ के विवाद निपटान निकाय में जाना होता है। जब तक विवाद हल नहीं हो जाता भारतीय निर्यातकों को अमेरिकी बाजार से कारोबार करने का नुकसान होता है। ये राशिपतन–रोधी शुल्क भारत से निर्यात पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

सब्सिडी – यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विकसित देश अपने उत्पादकों को बड़े पैमाने पर सब्सिडी प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका उर्वरकों के निर्यातकों को सब्सिडी दे रहा है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा आपूर्ति किए गए अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उत्पाद की लागत को कम करता है। इसलिए भारत और अन्य विकासशील देशों के निर्यातकों को विश्व बाजारों में प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है।

समुद्री डाकुओं के हमले की समस्याएं – अदन की खाड़ी में समुद्री डाकूओं के हमलों का एक बड़ा खतरा रहता है। वर्तमान में, भारत का अधिकांश पण्य व्यापार इस क्षेत्र से होकर गुजरता है। इनसे भारतीय निर्यातकों का जोखिम बढ़ जाता है।

बड़ी संख्या में निर्यात दस्तावेजीकरण – भारत से पण्य निर्यात करने के लिए बड़ी संख्या में दस्तावेजों की आवश्यकता होती है। भारत में, प्रत्येक निर्यातक को भारत से माल निर्यात करते समय औसतन 25 दस्तावेज भरने होते हैं। वर्तमान में सरकार ने इन सभी दस्तावेजों के लिए एकल खिड़की मंजूरी की व्यवस्था की है लेकिन फिर भी अधिकांश छोटे निर्यातक दस्तावेजीकरण के पुराने तरीके को अपना रहे हैं। बड़ी संख्या में निर्यात दस्तावेजीकरण भारत से व्यापार के लिए बाधाओं के रूप में कार्य करते हैं।

[3] http://www.business-standard.com/article/economy-policy/us-slaps-anti-dumping-duty-on-steel-wire-imported-from-india-china-118032100368_1.html

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए नीचे स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) भारत के व्यापार नीति के अंग के रूप में इसकी हालिया पहलों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) भारत के विदेश व्यापार के सामने आने वाली किन्ही दो चुनौतियों पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

19.6 सारांश

इस इकाई में भारत के विदेश व्यापार के पैटर्न, इसकी संरचना और इसकी चुनौतियों पर चर्चा की गई। यह इकाई स्वतंत्रता के बाद भारत के विदेश व्यापार के पैटर्न से शुरू होती है और विभिन्न पंचवर्षीय योजना के दौरान भारत के विदेश व्यापार के बदलते पैटर्न की व्याख्या करती है। इसके अलावा, इस इकाई में भारत के विदेश व्यापार की दिशा और संरचनाओं के बारे में चर्चा की गयी जिसमें इसने प्रमुख वस्तुओं के साथ विभिन्न देशों के साथ भारत के व्यापार का विश्लेषण किया। अंत में, इस इकाई ने अपने अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भारत के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों और समस्याओं पर चर्चा की।

19.7 मुख्य शब्द

राशिपतन–रोधी शुल्क : राशिपतन–रोधी (एंटी–डंपिंग) शुल्क एक संरक्षणवादी प्रशुल्क है जो एक घरेलू सरकार विदेशी आयातों पर लगाती है जिसके बारे में उसका मानना है कि इसकी कीमत उचित बाजार मूल्य से कम है

गैट : प्रशुल्क और व्यापार पर सामान्य समझौता (GATT) कई देशों के बीच एक गैर–बाध्यकारी समझौता था, जिसका कुलमिला कर उद्देश्य प्रशुल्क या कोटा जैसे व्यापार बाधाओं को कम या समाप्त करके अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना था।

प्रशुल्कीय और गैर–प्रशुल्कीय बाधाएं : प्रशुल्कीय बाधाएं गैट के अनुच्छेद II के अनुसार आयात शुल्क में वृद्धि को संदर्भित करती हैं। गैर–प्रशुल्कीय बाधाएं प्रशुल्कीय बाधाओं के अलावा किसी भी व्यापार बाधाओं को संदर्भित करती हैं, जैसे आयात लाइसेंसिंग, मानक, परीक्षण, लेबलिंग और प्रमाणन, राशिपतन–रोधी और प्रतिकारी उपाय, निर्यात सब्सिडी और घरेलू समर्थन।

सैनेअरी और फायटों सैनेटरी (एसपीएस) और व्यापार की तकनीकी बाधाएं (टीबीटी) : एसपीएस और टीबीटी समझौता व्यापार के लिए गैर–प्रशुल्कीय बाधाओं की एक श्रेणी है। एसपीएस का अर्थ स्वच्छता और फाइटोसैनिटरी उपाय है, इस समझौते के अंतर्गत सरकारें डब्ल्यूटीओ के तहत अपनी अर्थव्यवस्था की रक्षा के लिए खाद्य सुरक्षा और पशु और पौधों के स्वास्थ्य उपायों को लागू कर सकती हैं। टीबीटी का अर्थ व्यापार के लिए तकनीकी बाधाएं है। टीबीटी लेबलिंग आवश्यकताओं, तकनीकी विनिर्देशों के मानकों और गुणवत्ता मानकों जैसे उपायों और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के अंतर्गत पर्यावरण की रक्षा करने वाले अन्य उपायों का उपयोग करता है

विश्व व्यापार संगठन (WTO) : विश्व व्यापार संगठन (WTO) एक अंतर–सरकारी संगठन है जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को नियंत्रित करता है। विश्व व्यापार संगठन आधिकारिक तौर पर 1 जनवरी 1995 को मारकेश समझौते के अंतर्गत शुरू हुआ जिस पर 15 अप्रैल 1994 को 123 देशों द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे। इसने टैरिफ और व्यापार संबंधी सामान्य समझौते (GATT) की जगह ली जो 1948 में शुरू हुआ था। यह दुनिया का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संगठन है

19.8 कुछ उपयोगी ग्रन्थ

Datt and Sundaram, 'Indian Economy', 72th edition, S. Chand and Sons, New Delhi.

International Monetary Fund, *World Economic Outlook Database* (GDP based on Purchasing Power Parity). Accessed on March 27, 2018

The World Factbook, *Country Profiles*, Central Intelligence Agency. Accessed on March 27, 2018

Reserve Bank of India, Handbook on Statistics on Indian Economy

Important links for Foreign Trade Database –

https://www.trademap.org/Index.aspx?AspxAutoDetectCookieSupport=1

https://wits.worldbank.org/

http://www.commerce.gov.in/InnerContent.aspx?Type=TradeStatisticsmenu&Id=254

http://commerce-app.gov.in/eidb/default.asp

https://www.fieo.org/view_section.php?lang=0&id=0,30,155

19.9 बोध प्रश्नों की जांच हेतु उत्तर/संकेत

बोध प्रश्न 1

1) खंड 19.1 देखें

2) खंड 19.4 देखें

बोध प्रश्न 2

1) खंड 19.5 देखें

2) खंड 19.6 देखें

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY